Chapter. 7

सप्तम अध्याय

इतिहास निरूपण

(पृष्ठ २७३ - ३०१)

इतिहास निरूपण

संस्कृत-कवियों में इतिहास-निष्ठा का अभाव : प्राचीन संस्कृत साहित्य के अध्येता इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हमारे पूर्वजों की रुचि घटनाओं के यथा तथ्य चित्रण में नहीं थी । वे कल्पना और अलंकारिकता की अतिशयता में वस्तुस्थिति से दूर चले जाते थे और कभी कभी तो मूलरूप को ही बदल देते थे । संस्कृत साहित्य के अपार भंडार में इसीलिए शुद्ध इतिहास को प्रस्तुत करने वाली सामग्री नहीं के समान है । हर्ष के समकालीन और उन्हीं के दरबारी कवि बाणभट्ट ने ' हर्षचरितम् ' में हर्ष संबंधी ऐतिहासिक विवरणों को काल्पनिक बना दिया है, इतना कि वह एक श्रेष्ठ गद्य काव्य मात्र रहा गया है ।[१]

हिन्दी कवियों में इतिहास-निष्ठा का विकास : परन्तु हिन्दी साहित्य के विकास में उसकी अपनी मौलिकता और अपनी विशेषता निहित मिलती है । संस्कृत साहित्य की परम्परायें और रूढ़ियां यहां वहीं कीवहीं नहीं बनी रहीं, वरन उन्हें हिन्दी ने अपनी प्रकृति के अनुसार ढाल लिया है । संस्कृत की अपेक्षा हिन्दी में ऐतिहासिक और यथा-तथ्यवर्णन अधिक उपलब्ध हैं । हिन्दी साहित्य के निर्माण-काल की परिस्थितियां ही इसका कारण हैं । हिन्दी के आदिकाल के कवि के सामने राष्ट्र संकटपूर्ण स्थिति में था । सम्पूर्ण युग संघर्ष और झंझावातों से भरा था । अत: इस विकट घड़ी में जीवन-संघर्ष को स्वप्निल और कल्पनापूर्ण बना देना न तो व्यावहारिक था और न संभव । फलस्वरूप हिन्दी के आरंभकाल से ही उसके साहित्य में ऐतिहासिक विषय वस्तु भी समाहित होने लगी । यद्यपि ' वीसलदेव रासो ' और ' पृथ्वीराज रासो ' को इतिहास की दृष्टि से भ्रष्ट सिद्ध कर दिया गया है परन्तु संभव है अपने मूल रूप में उनमें वे ऐतिहासिक असंगतियां

१- तुलना करिये ' संस्कृत लिटरेचर० ' पृ० २२८

न रहीं हों जो आज उपलब्ध हैं । यहां इन दोनों ग्रंथों के आधार पर हमें इतना ही कहना है कि हिन्दी के आदिकालीन साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य और कथ्य की प्रवृत्ति बीज रूप में निहित है । नाल्ह और चन्दवरदायी की मूल रचनाओं में ऐतिहासिक विषय-वस्तु का बीच अंकुरित हुआ यह कहना भी असंगत न होगा । इसके पश्चात विद्यापति की कीर्तिलता तो अपनी ऐतिहासिकता के लिए असंदिग्ध है ।[1] विद्यापति के उपरांत हिन्दी के दूसरे महाकवि स्वयं केशवदास के लिखे ग्रंथ ' जहांगीर जस चंद्रिका ' और ' वीर सिंहदेव चरित्र ' इस परम्परा के दो प्रमाणित मार्ग-चिन्ह हैं ।[2]

कहना न होगा कि केशवदास के समय तक हिन्दी कवियों का शाही और सामंती दरबारों से घनिष्ठ संबंध स्थापित हो चुका था । अत: ऐतिहासिक दृष्टिकोण का अधिकाधिक पल्लवन हुआ क्योंकि मुसलमानों ने काफी पहले ही इतिहास और उसके लिखने के महत्व को समझ लिया था । अब इसके विकास में राष्ट्रीय आवश्यकता के साथ संपर्कजन्य संस्कार भी सक्रिय हुए और रीतिकाल में लक्षण और उदाहरणों में निबद्ध विपुल श्रृंगारी रचनाओं के साथ ही ~~अनेक~~ शुद्ध इतिहास को प्रस्तुत करने वाली अनेक रचनायें भी लिखी गईं । इस प्रवृत्ति के अनुसरण में इनके कर्ता कवियों में लोक जीवन और लोक संघर्ष के प्रति असंदिग्ध आस्था की व्यंजना होती है । साथ ही साथ लोक की इतिहास के प्रति जागरूकता भी स्वीकार करनी पड़ती है । जो जनता का नेतृत्व करते थे उनकी कीर्ति-कथन में कवि को आत्मतोष और समाज को सुनने पढ़ने में आत्म तृप्ति मिलती रही होगी तभी कवियों ने आत्म प्रेरणावश ऐसे चरित्र नायकों के वीर चरित्रों को लिखा और जनता ने उसे हृदय से अपनाया । भगवंतराय से संबंधित जो काव्य उपलब्ध हैं वे इन्हीं तथ्यों पर प्रकाश डालते हैं । एक ओर वे लोक संघर्षी व्यक्तित्व के प्रति कवियों की आस्था को प्रकट करते हैं तो दूसरी ओर लोक की ऐसे काव्य को ग्रहण करने की अभिरुचि पर प्रकाश डालते हैं ।

१- वृहत् इति० भाग-१, पृ० ३६४

२- चन्द्रबली पाण्डेय कृत - केशवदास

भगवंतराय के प्रति लिखी गई यह काव्य सामग्री सामयिक कवियों की देन है, अत: इसकी ऐतिहासिकता का प्रश्न स्पष्ट और महत्वपूर्ण है । इस अध्याय में हम इसी का विवेचन करेंगे ।

इतिहास का निरूपण क्यों ?

जब हम इतिहास-निरुपण का प्रश्न उठाते हैं तो इसका अर्थ है कि हम स्वीकार करते हैं कि आलोच्य इतिहास अस्पष्ट, अव्यवस्थित तथा संदिग्ध है । भगवंतराय से संबंधित समस्त सूत्रों से प्राप्त विवरणों से ये तथ्य प्रकट हैं । अनुश्रुतियों और कवियों के वर्णनों तथा तत्कालीन इतिहासकारों की रचनाओं में तथ्य संबंधी असंगतियां हैं, जिनके कारण इतिहासकारों के वर्णनों की विश्वसनीयता संदिग्ध जान पड़ती है । यह संदेह तब और पुष्ट होता है जब हमें इन इतिहासों में कतिपय तथ्यों पर मत-वैषम्य तथा परस्पर विरोधी सूचनाएं मिलती हैं । अतएव आवश्यकता है कि तत्कालीन इतिहास की सामग्री के विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध सूचनाओं का वैज्ञानिक विवेचन कर ऐतिहासिक प्रश्नों का बुद्धिग्राह्य समाधान प्रस्तुत किया जाय । इस विवेचन और तथ्य निरूपण में साहित्य, विशेषरूप से कवि-कृतियों के महत्व पर विशेष विचार किया जायगा ।

सामग्री और अध्ययन प्रविधि

इतिहास, काव्य तथा अनुश्रुतियों में रचित समस्त सामग्री का सापेक्ष अध्ययन करके मूल तथ्य का निरुपण ही विश्वसनीय होगा । इतिहास के अन्तर्गत वह सामग्री है जो फारसी के इतिहासकारों ने लिखी है । इसके लिखने वाले मुसलमान हैं, जो तत्कालीन शासन के समर्थक थे । इसी प्रसंग में उत्तर भारत में स्थित मराठा कर्मचारियों आदि के कुछ पत्र हैं जो उन्होंने पेशवा की सूचनार्थ पूना भेजे थे । इनका उद्देश्य तथ्यों को प्रेषित कर उनसे पेशवा को अवगत करना मात्र था, अत: यह रागद्वेष विहीन सामग्री इस प्रसंग में बहुत

ही उपयोगी है । इनमें से कुछ ऐसे भी थे जो केवल स्वान्त:सुखाय बिना किसी का पक्ष लेने की भावना से अपने उद्गारों को लिख गये हैं जैसे मुहम्मद[१] । तीसरे प्रकार की वह अलिखित सामग्री है जो परम्परा से अनुश्रुति रूप में मिली है । नायक भगवंतराय का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली होने के कारण लोगों की भावना पर वह छा गया था और क्रम से अपने परवर्तियों की स्मृतियों में लोग उसे छोड़ते गये ।[२]

उक्त सम्पूर्ण सामग्री में से इतिहासकारों ने इतिहास लिखते समय सबसे अधिक प्रयोग फारसी की सामग्री का ही किया है और उसे ही प्रामाणिक माना है । काव्य-सामग्री या अनुश्रुतियों का उपयोग इस क्षेत्र में उपेक्षित रहा है । परन्तु आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करने पर फारसी इतिहासों में मिलनेवाली यह सामग्री एकपक्षीय सिद्ध होती है । धर्म-भावना एवं धर्म राज्य के प्रति आस्थावान होने के कारण उन्हें(इतिहास लेखकों को) इन दोनों के विरोधी व्यक्ति का उत्कर्ष दिखाना कभी भी रुचिकर नहीं हो सकता था । यह बात मराठा कर्मचारियों के पत्रों से तुलना करके देखने पर पूर्णरूप से स्पष्ट हो जाती है । विभिन्न पक्षों के साक्ष्यों से प्रकाश में आने वाली वैषम्यपूर्ण सामग्री में भी तथ्यों की खोज का सुंदर सुयोग है । दोनों ही प्रतिद्वन्द्वियों के अपने अपने पक्षधर हैं तथा कुछ तटस्थ भाव से लिखे गये विवरणों के अतिरिक्त इस प्रसंग में अनुश्रुतियों से भी बहुत अधिक सहायता ली गई है । यह अनुश्रुति, श्रुति की सहोदर मानी गई है । अत: यह सुना हुआ सत्य है जिसकी साक्षी से अनेक प्रसंगों की गुत्थियों को सुलझाकर सत्य का साक्षात्कार करने में सहायता मिलती है ।[३]

१- `ये कर डारा है मन माना मुहम्मद खां सचारा है` जंगनामा०

२- जिस मंडल का भौगोलिक स्वरूप प्रथम अध्याय में निश्चित किया है उसके अन्तर्गत अब भी अनेक गांवों में इस संबंध की अनुश्रुतियां सुनने को मिलती हैं ।

३- स्वयं अनुश्रुतियों को यहां स्वतंत्र अध्ययन का विषय नहीं बनाया है पर इतना संकेत यहां अवश्य कर देना उचित है कि यदि इतिहास के सापेक्ष्य में अनुश्रुतियों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाय तो स्वयं इतिहास के साथ सामाजिक धारणाओं को प्रकट करने वाले अनेक मनोरंजक तथ्य सामने आयेंगे ।

उपर्युक्त समस्त सामग्री में से कविता का कलेवर सबसे अधिक है। जैसा ऊपर कहा गया है, मूल रूप से हमें इसी सामग्री की ऐतिहासिकता की परीक्षा करनी है तथा यह निश्चित करना है कि कवियों ने इतिहास के प्रति कितनी ईमानदारी बरती है तथा इतिहास का अनुसंधान करते समय इनसे कितनी अधिक सहायता ली जा सकती है।

मूलरूप से किसी एक रचना की ऐतिहासिकता पर विचार करते समय किसी अन्य कवि की वाणी से जहां प्रमाण मिला है वहां उसकी भी सापेक्ष्य प्रामाणिकता सिद्ध हो जाती है, अत: उसके उस अंश की ऐतिहासिकता का पुनर्विचार न किया जायेगा। इस प्रसंग में हम किसी भी रचना पर विचार करते समय अन्य कवियों के वर्णनों, इतिहासकारों के कथनों एवं उनकी ध्वनियों तथा अनुश्रुतियों से यथावश्यक सहायता लेंगे।

हमारे सामने जो उपलब्ध सामग्री है उसके वैज्ञानिक अध्ययन को फारसी की सामग्री के साथ समन्वित करके भगवंतराय से संबंधित इतिहास को उसके मूलरूप में यहां प्रस्तुत कर रहे हैं जो अब तक प्राय: उपेक्षित ही रहा है।

जैसिंह विनोद के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा

इतिहास की दृष्टि से महाकवि देव की ' जैसिंह विनोद ' नामक रचना द्वारा निम्नांकित महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आते हैं। भगवंतराय के वंश, पूर्वज और उनके प्रारंभिक जीवन से संबंधित कुछ विवरणों की जानकारी देने वाली केवल यही रचना है। अतएव इतिहास के जिज्ञासु के लिए इसका महत्व बहुत अधिक है। इसकी सामग्री की परीक्षा के लिए असोथर के सजरे एवं अनुश्रुतियों का ही अवलम्ब है। प्रमुख ज्ञातव्य तथ्यों को इस प्रकार रखा जा सकता है :

१- चौहानों की उत्पत्ति कवि ने आबू के यज्ञ कुंड से बताई है। मध्यकाल और विशेषकर उत्तर मध्यकाल में सर्वत्र यही मत प्रचलित और स्वीकृत था। इस समय के लिखे गए समस्त ग्रंथों एवं बड़वों की पोथियों में चौहान अग्निवंशी एवं आबू के यज्ञकुंड से उत्पन्न माने गये हैं।

(१) चौहानों की उत्पत्ति

(२) भगवंतराय ने मालवा के विक्रम भोज जैसे विश्रुत गौरवशाली शासकों की परम्परा को वंशानुक्रम में प्राप्त किया ।[१]

१- मध्यकाल में मालव प्रदेश में खीचियों का प्रभुत्व था । अचलदास के समय में जब गागरोण की शक्ति का पराभव हुआ उस समय खीची अपनी राजनीतिक शक्ति के पूर्ण विकास पर थे । अतएव इसी आधार पर इन्हें मालवा के पूर्व कालीन विक्रम और भोज जैसे विश्रुत शासकों की परम्परा में प्रतिष्ठित करके कवि ने गौरवान्वित किया । कवि के कथन से भगवंतराय के पूर्वजों की महिमा का भी बोध होता है । उनके मालवा के शासन-कुल में होने के प्रमाण वंशावलियों, ख्यातों तथा अद्यावधि संपर्कों से सिद्ध हैं ।

(३) गजसिंह से लेकर भगवंतराय के पुत्रों तक की वंशावली और प्रासंगिक प्रशस्ति ।[१]

१- कवि ने गजसिंह से लेकर भगवंतराय के भाइयों और उनके पुत्रों के वंश का यथाक्रम उल्लेख किया है । यह वंशक्रम असोथर के सजरे से पूर्णरूप से मेल खाता है । न कहीं नामों में अन्तर है और न उनके क्रम में । अत: इसकी प्रामाणिकता का प्रश्न निर्विवाद है । जिन घटनाओं या संबंधों के उल्लेख मिलते हैं, वे भी अनुश्रुतियों से अक्षरश: अनुमोदित हैं । उदाहरणार्थ जैसिंह देव के समय में वत्स गोत्र से बदल कर गौतम गोत्रीय प्रचलित होने का कवि देव ने उल्लेख किया है जो, अनुश्रुतियों में इस प्रकार है - " जैसिंह अपनी पत्नी को इतना प्रेम करते थे कि बिना उसको साथ बैठाए अन्न नहीं ग्रहण करते थे । एक बार शिकार में अतिकाल हो जाने से उन्हें वहीं बड़ी भूख लग आयी । उनके ब्राह्मण मंत्री ने कहा, मैं रानी का चित्र बनाए देता हूं आप उसी चित्र को भोजन कराकर स्वयं भी भोजन ग्रहण कर आत्मरक्षा करें । मंत्री को सरस्वती की सिद्धि थी । उसने चित्र बनाया और अंत में अपनी आराध्या से आंख बन्दकर प्रार्थना की कि यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे पूरा कर दो । ध्यान करते ही लेखनी से स्याही का एक बूंद चित्र में बनी रानी की जंघा पर गिर पड़ा । ब्राह्मण ने राजा को वह चित्र दे दिया । चित्र वास्तविक स्वरूप की पूर्ण अनुकृति तो था ही, और जंघा के तिल को भी चित्र में देखकर राजा के मन में सन्देह जागा । उन्हें ब्राह्मण के और रानी के संबंधों की बात खटकी । फलस्वरूप ब्राह्मण को बंधवाकर जमुना में जीवित प्रवाहित करा दिया । ब्राह्मण मर कर ' ब्रह्म ' हो गया तथा इनके परिवार को विनष्ट करने लगा । अझफागढ़ वीरान होने के साथ ध्वस्त होने लगा । अंत में उसी ब्राह्मण मंत्री की संतुष्टि के लिए पूजा आराधना की गई । ब्राह्मण द्रवित हुआ और उसने कहा कि मैंने मरते समय तुम्हारे कुल के नाश का संकल्प किया था । पर अब वैसा नहीं करना चाहता । मेरे बचन भी न टूटें और तुम्हारा नाश भी न हो इसलिए तुम्हें अझफागढ़ छोड़ना पड़ेगा तथा ऐसी जगह आबाद होना पड़ेगा जहां किसी ब्राह्मण का खेर हो (अझफा छोड़ कर असोथर (अश्वत्थामा पुरी) में आबाद होने का यही कारण बताया जाता है) तथा अपना पितृ गोत्र बदलकर मातृ गोत्र ग्रहण करने की शर्त भी लगायी । तब से असोथरवंश के खीची अब तक अपने को गौतम गोत्रीय भी कहते हैं । ब्रह्म हत्या का उल्लेख कवि शायद नहीं करना चाहता था अत: वह केवल ' गौतम गोत्र ' के ग्रहण में ही कथानक को समाप्त कर गया है ।

((४) पाल्हन देव खीची ने संवत १५५५ में गौतम राजाओं को पराजित किया।[१]

१- पाल्हन देव खीची द्वारा संवत् १५५५ में गौतमों के पराजित होने की निश्चित तिथि के जान लेने से तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश पड़ता है।

(अ) खीची गजसिंह का समय निर्धारित करने में (ब) वंशावली की वैज्ञानिकता की परीक्षा करने में तथा (ज) गौतम और खीचियों के संबंध एवं विग्रह की जानकारी प्राप्त करने में।

(अ) फतेहपुर गजेटियर के अनुसार गजसिंह का अन्तर्वेद में आकर बसने का समय सन् १५४३ ई० के आसपास दिया है। किन्तु देव की इस रचना के अनुसार पाल्हन देव जो गजसिंह की चौथी पीढ़ी में थे, का समय १५५५ वि० है। कवि ने अपना यह ग्रंथ गजेटियर लिखे जाने के लगभग दो सौ वर्ष पूर्व लिखा था। वंशावलियों की छानबीन करके मनुभाई मेहता एवं देसाई ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथों 'हिन्द राजस्थान' एवं 'चौहान कुल कल्पद्रुम' में गजसिंह को गागरोन के अचलदास खीची का सबसे छोटा पुत्र माना है। अचलदास के मारे जाने के बाद गागरोन किला सन् १४२३ ई० में खीचियों के हाथ से निकल गया। अत: गजसिंह का अन्तर्वेद में आना अवश्य ही वि०सं० १४८५-८६ के आसपास संभव हुआ होगा। इस प्रकार देव का मत इन दोनों इतिहासकारों के मतों से पुष्ट हो जाता है। अत: उनकी चौथी पीढ़ी का समय वि०सं० १५५५ ही ठीक जान पड़ता है। इस प्रकार गजेटियर में उल्लिखित तिथि भ्रमपूर्ण सिद्ध हो जाती है। वास्तव में देव की इस तिथि से गजसिंह का अचलदास का ही पुत्र होना प्रमाणित होता है। अत: यह कह सकते हैं कि समय के निश्चित हो जाने से ख्यातों और वंशावलियों के विवरण पुष्ट हो जाते हैं। गजसिंह का भी समय निश्चित हो जाता है।

(ब) गजसिंह से भगवंतराय तक का समय जब निर्भ्रान्त हो जाता है तब वंशावली की पीढ़ियों की वैज्ञानिकता को एक आधार मिल जाता है। एक पीढ़ी के लिए इस प्रकार २६ औसत वर्ष का निश्चय हो जाता है जिसकी वैज्ञानिकता में विवाद नहीं उठाया जा सकता।

(स) यह निश्चित है कि खीची गौतमों की गद्दी पर आए। अनुश्रुतियां और गजेटियर इसे पुष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त सबसे पुष्ट प्रमाण है जिसे स्वयं कवि ने भी बताया है कि खीची अपने को जैसिंहदेव (गजसिंह के पुत्र) के समय से गौतम गोत्रीय कहने लगे। इसकी स्वीकृति अब तक उसी रूप में है। कर्मकाण्डों के अवसरों पर वत्स और गौतम दोनों ही गोत्रों के उच्चारण किए जाते हैं। आगे चलकर संभवत: इसी विग्रह के फलस्वरूप खीचियों और गौतमों के संबंध शताब्दियों के लिए टूट गए जहां तक ज्ञात है परवर्ती काल में इस विरोध में कटुता नहीं उपेक्षा और तटस्थता के ही भाव थे।

(५) गाजीपुर को जीतकर भगवंतराय उसके स्वामी बन गए ।[१]

(६) भगवंतराय का प्रभाव विस्तार और मुगलों से विरोध ।[२]

१- भगवंतराय के जन्मकाल में उनके पिता की आर्थिक विपन्नता की बात कही जा चुकी है । उन्होंने खेत में मिले धन से ३ परगने खरीदे थे । गाजीपुर का दुर्ग भगवंतराय ने अपने बाहुबल से जीता और यहीं पर उन्होंने अपने पिता के राज्य से अलग होकर अपने पौरुष पूर्ण व्यक्तित्व की विजय पताका फहरायी और उसके प्रभाव क्षेत्र के विस्तार का सूत्रपात किया । असोथर उन्होंने अपने अधिकार में नहीं लिया, अन्य भाइयों के लिए उसे छोड़ दिया था । उनका जीता प्रदेश पिता के तीन परगनों से अलग ही रहा है इसका प्रमाण मुहम्मद कवि के जंगनामा में सादत खां द्वारा किये गये संधि के प्रस्ताव ` चौदह परगने ` से भी स्पष्ट है । कारण जब उनके पुत्ररूपराय गद्दी पर बैठे और उनके साथ अन्त में नवाब को संधि करनी ही पड़ी तब रूपराय के पास १७ परगने रहे । सम्भवत: पिता के १४ परगने तथा पितामह के ३ परगने मिलाकर उसने यह क्षेत्र पाया था ।

२- यह रचना संवत् १७७६ की है । अत: इस समय तक भगवंतराय का व्यक्तित्व एवं उनका प्रभाव कितना पुष्ट एवं व्यापक हुआ था इसका पता भी चल जाता है । राजाओं और जमींदारों का उपहार लेकर उनकी सेवा में उपस्थित होना इतना तो प्रकट करता ही है कि भगवंतराय की स्थिति इस समय तक एक सफल एवं प्रभावशाली नायक जैसी हो चुकी थी । उनके अनुगामियों का एक वर्ग था । वे अपने क्षेत्र में अपनी शक्ति की धाक जमा चुके थे । इसके अतिरिक्त उनके मुगल शासन के विरोधी होने के प्रमाण भी मिल जाते हैं । इतिहास में इसका अनुमोदन है । छत्रशाल के प्रदेश में बंगश के आक्रमण के पूर्व भगवंतराय मुगलों के घोर विरोधी थे । इसे तत्कालीन कई इतिहासकारों ने लिखा है ।(तुलना कीजिये - ले०मु० भाग-२ पृ० २३१में उद्धृत पाद टिप्पणी के ग्रंथों की सूची से) यह कवि भी लिखता है ` आगरे की पौरते प्रयाग लौं पुकार उठी `

' भगवंतराय खीची का जंगनामा ' के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा

कवि मुहम्मद ने इस रचना का प्रणयन भगवंतराय के निधन के लगभग बारह वर्ष बाद सन् १७४७ ई० में किया था ।[१] कवि नायक का समकालीन था और उसने वर्णन भी वैसा ही सजीव किया है । न भाषा में कृत्रिमता है और न भावों में राग-द्वेष का गंध । घटना सत्य को हृदय के राग में घोल कर ज्यों का त्यों लिख देना ही इस कवि का इष्ट था । इस कृति में भगवंतराय के जीवन-संघर्षों के अंतिम चार वर्षों का वर्णन जिस विस्तार से मिल जाता है वह एक स्थान पर किसी भी कवि या इतिहास लेखक से नहीं प्राप्त होता । ये चार वर्ष उनके उत्कर्ष के सबसे महत्वपूर्ण दिन थे । इतना चकित कर देने वाला उत्कर्ष था कि विरोधियों के शिर पर आसमान टूटने लगा था ।[२] इसलिए विरोधी और सहयोगी दोनों ही पक्षों के लिए इन चार वर्षों की महत्ता सबसे अधिक है । इस कवि ने इसी उत्कर्ष काल का वर्णन किया है । साधारणरूप से अन्य इतिहासकारों एवं कवियों ने अपने वर्णन इसी समय के भीतर से ग्रहण की हैं, अतएव कवि की प्रामाणिकता की परीक्षा के लिए साक्षियों की कमी नहीं । जंगनामा की घटनाओं और पात्रों के वर्णन निम्नरूप से दिए जा रहे हैं, जिनकी प्रामाणिकता में अन्य संबंधित विवरणों को पाद टिप्पणी में उद्धृत किया गया है । जिनसे इनकी पुष्टि होती है । इस प्रकार प्रमाण में पूरक रूप से उपयोग में लाई गई सामग्री की भी सत्यता सिद्ध हो जाती है ।

' कोड़े का फौजदार जां निसार खां वजीर आजम का साला था ।[३] उसकी

१- हिजरी ११६० ' चहलसी चहल सन रहते, मुहम्मद शाह के कहते ' जंगनामा०
चहल = ४० सी = ३० - चहल = ४० = ११६०

२- ' जाये के चर्ख दूं कुनद इम्दाद नाकिसां
खैर अज़ फ़िसार हिस्सा बरारत दिमार मर्द '
मीरातुल० पृ० १७१ अ

३- मीरातुल० पृ० १७० ब

प्रकृति बड़ी झगड़ालू थी ।[1] वजीर की अनुमति लेकर उसने भगवंतराय पर आक्रमण किया किन्तु फतेहपुर में उसे बुरी तरह पराजित होना पड़ा । भगवंतराय ने उसके राज्य पर अपना अधिकार कर लिया ।[2] बेचारे नवाब के परिवार के लोगों का कहीं ठिकाना न रहा ।[3] इस युद्ध में भगवंतराय की सहायता करने वाले राजा गिरोह बनाकर आए थे ।

वजीर अपनी सेना के साथ दक्षिण में मराठों को नर्मदा पार तक खदेड़ चुका था । तभी उसने उत्तर की ओर भगवंतराय के दमन के लिए अपनी सेना को मोड़ दिया ।[4] बुंदेलखंड प्रान्त में दतिया और ओरछा के बुंदेले राजा भी इस अभियान में उसके साथ हर्ष पूर्वक हो लिए ।[5] जमुना उतर कर वजीर की सवा दो लाख घोड़ों की सेना[6] गाजीपुर की ओर बढ़ी । भगवंतराय परिस्थिति को अनुकूल न देख युद्ध का यह

१- मीरातुल० पृ० १७० ब

२- मीरातुल० पृ० १७१ अ; सा०जा०इ०-८, पृ० ३४१

३- मीरातुल० पृ० १७१ अ; सियारुल० भाग-१, पृ० २६६; सा०जा०ई०-८ पृ० ३४१ तथा रासा और विरुदावली

४- तुलना कीजिये, लै०मु० भाग-२, पृ० २७७

५- पेशवा दफ्तर० १४ पत्र संख्या ६

६- रुस्तम अली ने ता०हिं० इ० ८ पृ० ५० में वजीर के साथ दिल्ली से प्रस्थान करने वाली सेना की संख्या ७०,००० लिखी है । इस सेना में सूबेदारों, फौजदारों एवं सहायक राव-राजाओं की सेनायें भी आगे बढ़ने पर सम्मिलित हुई जिससे अवश्य ही यह काफी बड़ी सेना हो गई होगी फिर भी कवि द्वारा निर्देशित संख्या के व्यंग्यार्थ से यह आशय निकालना ही अधिक ठीक होगा कि वजीर की सेना बहुत बड़ी थी ।

अवसर टाल कर जमुना उतर गए । दतिया के बुंदेले राजा राव राम चन्द्र ने गाजीपुर पर अपना अधिकार करके किले और देश को मिट्टी में मिला दिया ।[१]

वजीर के दिल्ली वापस लौटते ही भगवंतराय ने प्रत्यावर्तन किया ।[२] सूचना पाते ही विरोधी पक्ष ने भी पूरी तैयारी के साथ सामना करने के लिए प्रस्थान किया । दोनों दलों का सामना हुआ । ख्वाजा मीर का हाथी गोली से घायल हो गया तथा वह मैदान से भाग निकला । साहेब राम युद्ध में काम आया । राव राम चन्द्र ने अन्त में सामना तो अवश्य किया परन्तु वह भी स्वर्ग सिधारा । विजयी भगवंतराय ने पुन: अपने प्रदेश पर अपना शासन स्थापित कर लिया ।[३]

वजीर ने यह सूचना पाते ही सुप्रसिद्ध सेनापति सादत खां को पत्र लिखा । पत्र में वजीर ने सादत खां को उत्तेजित करने के लिए उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की ।[४]

पत्र पाते ही सादत खां ने आक्रमण की तैयारी कर दी । बिठूर होते हुए उसकी फौजें मध्यदेश में प्रविष्ट हुई ।[५] नवाब ने गाजीपुर पहुंच कर घेरा डाल दिया ।[६]

१- पेशवादफ्तर० १४ पत्र संख्या ६; मीरातुल० पृ० १७१ ब

२- मीरातुल० पृ० १७१ ब; सियारुल-१ पृ० २६६

३- मीरातुल० पृ० १७१ ब; सियारुल०-१ पृ० २६६; शंभुनाथ मिश्र; विरुदावली०

४- तुलना कीजिये सियारुल०-१ पृ० २६६ के इन शब्दों से - 'यदि उसके(सादत खां) हृदय में मुगलों के लिए कुछ आदर-भाव या मुसलमान धर्म के लिए कुछ भी उत्साह है तो वह इस आततायी दुष्ट(भगवंतराय) को दंड दे ।'

५- रासा० में जाजमऊ के पास गंगा पार करना बताया गया है परन्तु बिठूर के पास ही गंगा पार करना अधिक ठीक जान पड़ता है क्योंकि नवाब दिल्ली के रास्ते से अपनी फौजें लौटा लाया था । तुलना कीजिये - सियारुल० -१ पृ० २७०

६- रासा० में नवाब का पड़ाव गाजीपुर किले से आधे योजन पर दिखाया गया है, यहां युद्ध के चिन्हस्वरूप खेत रहे वीरों का मुंडचौरा बना है ।

भगवंतराय भी युद्ध की पूरी तैयारी के साथ अपनी सुसज्जित सेना लेकर युद्ध भूमि में शत्रु का सामना करने के लिए उपस्थित हुए । युद्ध क्षेत्र में अपनी सेना को तीन भागों में बांट कर उन्होंने विकराल वेग से शत्रु पर धावा बोल दिया । समस्त सेना का नेतृत्व वे सेना के आगे रहकर स्वयं कर रहे थे ।[१] उन्होंने अपने विश्वस्त सैनिकों को प्रेरित किया कि वे सीधे वहीं टूट पड़े जहां सादत खां स्वयं मौजूद है ।[२] सैनिकों को उन्होंने सचेत भी किया कि भागने पर अब कहीं भी ठिकाना नहीं मिलेगा । यह आदेश पाते ही सैनिक अश्वों की वल्गायें उठा सीधे सादत खां के व्यूह में प्रवेश कर चले । इस आक्रमण की सूचना मिलते ही सादत खां अपने स्थान से हटगया ।[३] उसके स्थान पर अबूतुराब खां नामक नवाब के अत्यन्त विश्वास पात्र सेनानायक ने आकर भगवंतराय का सामना करने की ठानी ।[४] तुराब खां को भगवंतराय ने अपने भाले का लक्ष्य बनाया ।[५] चारों और भयंकर मारधाड़ के बीच तेज सिंह[६] नामक वीर से भगवंतराय का सामना हुआ, जिसमें तेजसिंह काम आया । भवानी सिंह ने इस युद्धघड़ी में भगवंतराय के दाहिने हाथ की तरह उनका साथ दिया ।[७] नर संहार का अंत होता न देखकर नवाब

१- ता० हिं० इ०-८ पृ० ५२; सा० जा० इ०-८ पृ० ३४२; सियारुल०-१ पृ० २७० तथा विरुदावली०

२- सियारुल० १-पृ० २७०; तथा रासा०

३- तुलना कीजिये सियारुल० १ पृ० २७०, रासा० एवं० किसी अज्ञात कवि की यह पंक्ति है - ' कीन्ही कैसी दगाबाजी वाजी चढ़ि, हाथी हाथा हाथी ते सहादत उतरिगो '
श्री शंभुनाथ मिश्र ने भी लिखा है :

' भगवंत नाहर के पंजाते निकसि शंभु, सहमें सहादत चले न छलछन्द है
बोलत न डोलत न खोलत पलक जैसे, सिंह के ससेटे दवि रहत गयंद है '

४- रासा०; सियारुल० १, पृ० २७० तथा विरुदावली०
५- सियारुल० १ पृ० २७०; सा०जा० इ०-८ पृ० ३४२; विरुदावली० रासा०
६- रासा० में भी इस वीर का उल्लेख है, विरुदावली ० में भी संकेत मिलता है ।
७- रासा०; विरुदावली; सारंग कवि का यह कवित्त :

' तंगन समेत काटि विहत मतंगन को
रुधिर सों रंग रणमंडल में भरिगो '

ने संधि का प्रस्ताव किया। भगवंतराय ने इसे ईश्वर की ही इच्छा समझकर तटस्थ भाव से स्वीकार कर लिया। संधि में भगवंतराय को बादशाह की ओर से १४ परगने गुजारे के रूप में देने का उल्लेख था जिनपर कर की पूरी छूट थी। वे शान्त होकर अपने इस प्रदेश में रहें और उसकी शासन व्यवस्था करें। बादशाह की ओर से खां ने उनके सामने केवलयही अनुबंध रखा था।[१]

संधि का यह समाचार मिलते ही युद्ध भूमि में भगवंतराय से कंधा मिलाकर खड़े होने वाले राजपूत वीर अपने अपने ठिकानों को यह आश्वासन देकर विदा होने लगे कि भविष्य में अवसर पड़ते ही वे फिर उपस्थित होकर अपनी सेवायें इसी प्रकार प्रस्तुत करेंगे। परन्तु सादत खां तो भगवंतराय को निर्मूल करने के अवसर की ताक में था। नवाब अपने सूबेदारों को आक्रमण के लिए प्रेरित करता, किन्तु भय से जड़ हुए सरदारों में उत्साह नहीं होता था वह हाथ मींजकर रह जाता था। इसी बीच कोड़े का चौधरी दुर्जन सिंह उपस्थित हुआ। उसने खां से प्रण किया कि या तो वह भगवंतराय को जीवित कैद करके या उसका शिर एक माह के भीतर ही नवाब के सामने ला देगा। अपनी इस प्रतिज्ञा के पूरी न होने पर उसने स्वयं अपना ही शिर नवाब को दण्ड रूप में देने का वचन दिया। नवाब ने चौधरी को सरोपाव और पान का बीड़ा प्रदान किया। दुर्जन सिंह ने अपने इस संकल्प की बात को अत्यंत गुप्त ही रखने का आश्वासन मांगा।[२] चंदेले, चौधरी बिसेन, कछवाहे, कलचुरिया, बैस और कनपुरिया राजपूतों की

१- जंगनामा की यह सूचना अन्य किसी भी लेखक ने नहीं दी है; अनुश्रुतियों से इसकी पुष्टि अवश्य होती है। और गहराई से विचार करने से अन्य प्रमाण भी इसकी ध्वनि देते हैं जिनका विवेचन इसी अध्याय के अगले पृष्ठों में भगवंतराय की मृत्यु पर विचार करते समय किया गया है।

२- रासा० में यह प्रसंग गंगातट पर गाजीपुर के आक्रमण के रास्ते पर दिखाया गया है।

सेनाओं से दुर्जनसिंह चौधरी ने सौ घुड़सवार अपने साथ के लिए छांट लिए ।[1] इन चुने हुए घुड़सवारों को उसने भगवंतराय की सेना ही जैसा केशरिया बना धारण कराया । प्रात: काल किले के द्वारपालों को इस भ्रम में डाल कर कि यह सेना उन्हीं के पदाधर राजपूतों की है जो संधि हो जाने के कारण विदा ले रहे हैं,[2] ये सैनिक किले के भीतर प्रवेश कर गए । भगवंतराय पूजा कर रहे थे । वे पूजा से माला और अपनी यम की धार वाली असि लेकर उठे, और इसी बीच दुर्जन सिंह ने उनके सामने पहुंचकर उन्हें ललकारा । भगवंतराय ने कहा " अब मेरा अन्त समय है और तुम ब्राह्मण पर अब क्या प्रहार करूं ? चौधरी ने अपने एक ही प्रहार से उनके वक्षास्थल को चीर दिया ।[3] भवानी सिंह आदि जितने शूर वीर थे सब एक एक कर काम आ गए[4] ।

१- विरुदावली० में भगवंतराय के जिन साथी राजपूतों की जातियों की गणना है है उनमें दुर्जनसिंह के साथ जाने वाले इन जातियों में से एक का भी उल्लेख नहीं है । बैस ही एक जाति है जो दोनों और थी । वास्तव में बैसों में आपस में भी बहुत अधिक विद्वेष था फिर इस क्षेत्र में इतनी अधिक संख्या में बैस हैं कि उनका बंटजाना स्वाभाविक था । चंदेले भगवंतराय के पुराने विरोधी थे । इसके पहले दतिया के राव रामचन्द्र सिंह के नेतृत्व में भगवंतराय के विरोधियों के सम्बंध में शंभुनाथ ने लिखा है " मुगल पठान न चन्देलन बुंदेलन को फैल्यो दल मानो प्रलै को वारा पार है ।"

२- भगवंतराय के युद्ध में जितनी सेना उनके साथ थी वह सब किले के भीतर नहीं आ सकती थी । किला सिर्फ ६५ बीघे के घेरे में है । फिर उसके भीतर महल और मंदिर थे। इस प्रकार वे अवश्य ही किले के बाहर डेरा डालकर या आसपास के गांवों में फैले रहे होंगे और विदा होते समय अपने नायक से मिलने के लिए आते रहे होंगे । प्रात:काल संभवत: इसी प्रकार भ्रम उत्पन्न हो जाने से दुर्जन सिंह का प्रवेश हो सका था । विदाई लेने के लिए बाहर से आते हुए स्वपदीय सैनिकों का कवि की रचना में संकेत है " वही रुखसत के पारा है ।"

३-इस संबंध में कई अनुश्रुतियां हैं । कुछ के अनुसार वे प्रयाग में सूली पर चढ़ा दिए गए थे । कुछ के अनुसार उन्हें अपने अंत का ज्ञान हो गया था और वे अब अंत समय में युद्ध करके ब्राह्मण हत्या नहीं करना चाहते थे । कुछ के अनुसार वे जीवित अन्तर्धान हो गए थे । हां, सभी अनुश्रुतियां युद्धभूमि में भगवंतराय की विजय सिद्ध करती हैं ।

४- कहा जाता है कि दुर्जन सिंह के साथ हुए धोखे के इस युद्ध में भी उसे अपने ८० साथी खोने पड़े थे ।

दुर्जनसिंह अन्तत: विजयी हुआ । नवाब ने यह समाचार पाते ही अपनी विजय की सर्वत्र चिट्ठियां भेज दीं और स्वयं दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया ।[१]

क्या भगवंतराय छल से मारे गये ?

मुहम्मद कवि की रचना द्वारा उपर्युक्त सम्पूर्ण ऐतिहासिक सामग्री के अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण यह प्रश्न सामने उपस्थित होता है कि भगवंतराय सादत खां के साथ लड़े गये मुख्य युद्ध के कुछ ही दिनों बाद दुर्जनसिंह के हाथों छल से मारे गये । इसके प्रमाणित हो जाने से युद्धभूमि में भगवंतराय की विजय और तदनन्तर सादत खां के साथ हुई संधि भी मान्य हो जाती है ।

सबसे पहले हम इतिहासकारों के विवरणों में इसका समाधान ढूंढेंगे । फारसी के तीन इतिहास ग्रन्थों में भगवंतराय की मृत्यु का उल्लेख मिलता है । सियारुल मुताखरीन में उन्हें सआदत खां तथा दुर्जनसिंह के संयुक्त प्रहारों से, सादत जावेद में दुर्जनसिंह तथा तारीखे हिन्दी में सआदत खां द्वारा मारा गया बताया गया है । यहां हमें तीनों ही स्रोतों से तीन प्रकार की बातें मिलती हैं परन्तु दुर्जनसिंह के ही हाथों मारे जाने के पक्ष में प्रमाण अधिक हैं । यह भी यहां प्रकट है कि फारसी इतिहास लेखक अपने नायक सादत खां के पक्ष को अधिक उभार कर रखना चाहते हैं । मराठी पत्रों में भगवंतराय की मृत्यु और उनके युद्ध का उल्लेख मात्र है । अत: उनसे कोई प्रत्यक्ष सूचना नहीं मिलती । रासा० में दुर्जनसिंह के ही साथ युद्ध करते हुए भगवंतराय के मारे जाने का संकेत है । परन्तु जंगनामा में यह घटना बहुत ही स्पष्ट रूप से रखी गई है । अनुश्रुतियों एवं असोथर की सामान्य मान्यतायें भी जंगनामा का अनुसरण करती हैं । अत: जंगनामा की सत्यता सर्वाधिक पुष्ट एवं प्रामाणिक है । इसी उल्लेख के साथ जंगनामा में आये दो महत्वपूर्ण उल्लेख यहां विचारणीय हैं - (१) भगवंतराय

१- सआदत खां, भगवंतराय एवं उनके पुत्र(वास्तव में वह भतीजा भवानी सिंह था) की खाल निकलवाकर उसमें भूसा भरवा कर तथा उन दोनों के मस्तकों को भाले में टंगवाकर वजीर कमरुद्दीन खां को यह भेंट देने के लिए दिल्ली प्रस्थान किया । सियारुल० १ पृ० २७१; स० जा० इ० ८ पृ० ३४२

और सादत खां के युद्ध में सादत खां का पक्ष निर्बल प्रमाणित होने के फलस्वरूप सादत खां द्वारा संधि-प्रस्ताव एवं (२) दुर्जनसिंह का सादत खां के सम्मुख उपस्थित होकर एक महीने के भीतर ही भगवंतराय को मारने की प्रतिज्ञा ।

इस प्रसंग में घटनास्थल की साक्षियों (   ) से निष्कर्ष निकालने के लिए आधार मिल जाते हैं । सादत खां और भगवंतराय की युद्ध तिथि १४ अक्टूबर १७३५ ई० है ।[१] नवाब इस विजय के उपलक्ष्य में बधाई लेने के लिए २२ नवम्बर,१७३५ ई० को दिल्ली[२] दरबार में उपस्थित हुआ । एक महीना चार दिन का समय गाजीपुर से दिल्ली के रास्ते में कैसे लग सकता है । यही नवाब सेना के साथ २० मील प्रतिदिन के[३] हिसाब से चल सकता था अत: बिना सेना के गाजीपुर से दिल्ली के मार्ग में इतना समय नहीं लगा सकता था ।

इस संदेह की पुष्टि उत्तर भारत में स्थित(संभवत: बांदा जो असोथर से केवल ४०-५० मील दूर है) मराठा कर्मचारियों के पत्रों से भी होती है । पेशवा के नाम भेजे गये इन कर्मचारियों के तीन पत्रों में इस घटना का उल्लेख है । पत्रों की तिथि २३,२४ और २८ नवम्बर १७३५ ई० है ।[४] इन पत्रों के लिखे जाने की तिथियों से प्रकट है कि इनके लिखने वालों ने बड़ी तत्परता से पेशवा के निकट यह समाचार पहुंचाने का प्रयत्न किया है, साथ ही यह भी प्रकट है कि इन लोगों की दृष्टि में इस समाचार का अध्यधिक महत्व था । अतएव भगवंतराय की मृत्यु की घटना यदि १४ अक्टूबर को

१- फ० नवा० के पृ० ४६ में आशीर्वादी लाल ने नवाब के कोड़ा पहुंचने की तिथि ६ नवम्बर १७३५ ई० लिखा है परन्तु इसका आधार कुछ भी नहीं लिखा । हमने रासा० की तिथि की गणना कराई है जिसके अनुसार कार्तिक शुक्ल नौमी संवत् १७९२ को १४ अक्टूबर १७३५ ई० के दिन थी । और उस दिन मंगलवार भी पड़ता है । इस प्रकार रासा० की तिथि न मानने का कोई कारण नहीं० जान पड़ता ।

२- तुलना कीजिये - फ० नवा० पृ० ५१

३- तुलना कीजिये लै०मु० भाग० २, पृ० ३४२

४- पेशवादफ्तर- १४ पत्र संख्या ४०,४१,४२

ही घटित हो गई होती तो पहले पत्र को भेजने में एक माह आठ दिन का समय नहीं लग सकता था । शेष दोपत्रों का क्रम भी प्रकट करता है यह सूचना कितनी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण ढंग से भेजी गई है । इस प्रकार ऐसा लगता है कि २२ नवम्बर के थोड़े ही पहले मराठा कर्मचारियों को यह सूचना मिली होगी । अत: भगवंतराय को नवम्बर मास के पहले पखवारे की किसी तिथि को ही दिवंगत हुआ मानना ठीक होगा ।

इस प्रकार नवाब के दिल्ली पहुंचने की[1] एवं रुस्तम अली के भगवंतराय के शिर को देखने की तिथि[2] एवं मराठा एजेंटों के पत्रों की तिथि को एक क्रम एवं एक साथ रखने में यही नहीं कि कोई असंगति नहीं होती वरन एक दूसरे की सापेक्ष्य सत्यता अधिक विश्वसनीय हो जाती है, जो यह सिद्ध करने में सहायक होती है कि भगवंतराय १४ अक्टूबर को न मारे जाकर नवम्बर मास के पहले पखवारे की १० वीं या १२ वीं तारीख के निकटकभी मारे गये होंगे । इस प्रकार मुहम्मद कवि द्वारा बताया गया दुर्जन सिंह की मोहलत का एक माह का समय भी संदिग्ध नहीं रहता ।

यहां रासा० और विरुदावली० पर भी थोड़ा विचार कर लेना उचित होगा । इनमें से विरुदावली में बिना किसी प्रतिद्वन्दी का उल्लेख किये भगवंतराय को युद्ध में दिवंगत हुआ बताया गया है । रासा में दुर्जनसिंह के साथ उनका युद्ध अंतिम दृश्य के रूप में वर्णित है । विरुदावली के कवि गोपाल जैसे उनके निधन के दारुण चित्रण को यथाशीघ्र पूरा कर देना चाहते हैं । रासा० के कर्ता सदानंद के लिए भी इस प्रसंग का विशद् वर्णन कर सकना अधिक मनोनुकूल नहीं रहा होगा । इन दोनों कवियों के इस प्रसंग के अंतिम वचनों से संकेत भी मिलते हैं कि उनके अंतकाल को कितना भव्य बनाकर वे सामने लाना चाहते थे ।

१- फ०ब० नवाब्स पृ० ५१

२- ता०हि० ६० ८, पृ० ५२

कंप्यो लोक अवलोकि सोक मय जंह तंह बज्यो
लखि चरित्र विधि हरि हर हिय अनुराग उपज्यौ
प्रेरित गन चलि बेगि समर अवनी महं आयो
कहि प्रसंग कर जोरि अमिय मय बचन सुनायो
अप्सरि सुचारु चहुंदिसि चमर चारु ढरत आनंद भयो
राजाधिराज भगवंत जू चढ़ि विमान सुर पुर गयो ।

(रासा०)

तथा

गयो सूर सुर लोक भानु मंडल मझाईकै
मान सहित मघवान जानि दीन्यो तेहि आसन
सज्जन सकल समेत छिनकु बैठयो सिंहासन
यहि भांति जिय जानिकै, कृपा कालिका कंत की
सुज्योति समानी ज्योति में राय भूप भगवंत की ।

(विरुदावली)०

वास्तव में इन कवियों का अभिप्रेत अपने नायक के उत्कर्ष को काव्यबद्ध करना था । एक बड़े युद्ध में अपने ही जैसे प्रतिद्वन्दी के समक्ष वीरगति पाना अधिक सम्मानजनक एवं गौरवपूर्ण था अपेक्षाकृत इसके कि वे दुर्जनसिंह के सौ सवा सौ आदमियों से घेर कर मारे जाते हुए चित्रित किये जाते ।

यहां यह भी ध्यान में रखना होगा कि रासा० और विरुदावली० के रचनाकारों के समक्ष सुख मूलक कल्पना प्रवण रचनाओं की पृष्ठ भूमि उन्हें दुखद प्रसंगों का यथातथ्य चित्रण कैसे करने देती ? अन्तत: तो उनके संस्कारों का नियमन हिन्दू संस्कृति और साहित्य की अत्यन्त प्राचीन परम्परा ही कर रही थी । इस प्रसंग में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के इन शब्दों से पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा " जिस प्रकार भारतीय कवि काल्पनिक कथानकों में ऐसी घटनाओं को नहीं आने देते जो दुख पूरक विरोधों को

उकसावें, उसी प्रकार वह ऐतिहासिक कथानकों में भी करता है। सिद्धान्त काव्य में उस वस्तु का आना भारतीय कवि उचित नहीं समझता जो तथ्य और औचित्य की भावनाओं में विरोध उत्पन्न करें। दुखोद्रेकजनक विषम परिस्थितियाँ ट्रेजिक कन्ट्रेडिक्शन्स की सृष्टि करें, परन्तु वास्तव में जीवन में ऐसी बातें आयेंगी ही। बहुत कम कवियों ने ऐसी घटनाओं की उपेक्षा कर जाने की बुद्धि से अपने को मुक्त रखा है। - हि० सा० आदिकाल० पृ० ७१

फिर दुर्जन सिंह का कपटपूर्ण आक्रमण भी सादतखां के युद्ध के ही क्रम में था। इसके पीछे भी प्रेरणा तथा शक्ति सआदत खां की ही थी अत: इन दोनों युद्धों को एक ही साथ सम्बद्ध कर दिया जाना काव्यशैली की दृष्टि से अस्वाभाविक नहीं, क्योंकि इन दोनों रचनाओं में काव्यरूप और काव्य-सौंदर्य की ओर भी इनके कवियों की रुचि है जबकि 'जंगनामा' स्वच्छन्द रूप से लिखा गया जान पड़ता है। भगवंतराय और सादत खां के बीच हुई संधि चर्चा का एक संकेत और है। आज से लगभग ३०-४० वर्ष पूर्व असोथर के पुराने कागजों की छानबीन और सफाई करते समय श्री दुलारेसिंह को पुराने कागज पर लिखा हुआ फारसी का यह मतला मिला था :

'गर सलाह सलहकुन अलहम्दुल्लाह
गर सलाह जंग बाशद बिस्मिल्लाह'

ये शब्द किसी संधि चर्चा के संदर्भ में उत्तर स्वरूप लिखे गये जान पड़ते हैं जब भगवंतराय युद्ध और संधि के लिए समानरूप से प्रस्तुत थे। यह अंश सादत खां की ओर से रखे गये संधि-प्रस्ताव के उत्तर की भी ध्वनि करता है। जंगनामा से स्पष्ट है कि संधि प्रस्ताव सादत खां का ही था अत: इसे उसी प्रस्ताव का उत्तर मानना ठीक प्रतीत होता है। भगवंतराय से संबंधित इस घटना के पूर्व युद्ध और संधि की ऐसी कोई घड़ी आई थी इसका इतिहास में कोई सूत्र नहीं मिलता। फिर मुहम्मद कवि ने भगवंतराय की ओर से जो उत्तर अपने काव्य में निबद्ध किया है उसका और इस मतले का भाव साम्य भी है :

'समझ भगवंत मरजीहक यही मत में विचारा है

o o o

खुशी और गम न कुछ आना, करेगा क्या हमारा है,

इन पंक्तियों को मिलाकर पढ़ने से दोनों में कोई अंतर नहीं प्रतीत होता है। शब्दावली में ही थोड़ा अन्तर है। भगवंतराय का ईश्वर विश्वास और युद्ध होने पर उसके लिए दृढ़ता प्रकट करते हुए शांत भाव से संधि को स्वीकार करने के विचारों को अपनी अपनी शब्दावली में सामने लाया गया है।

इन प्रमाणों के अतिरिक्त अनुश्रुतियां भी मुहम्मद के पक्ष में हैं [1] और सबसे प्रकट सत्य तो यह है कि भगवंतराय के वंशज दुर्जनसिंह के वंशज जगनवंशियों के हाथ का पानी तक नहीं पीते। इतना ही नहीं उनके गांवों के कुवों का भी पानी नहीं ग्रहण करते। इस कटुता की भावना की पृष्ठ भूमि अवश्य ही किसी गहरे आघात पर आश्रित मानी जाएगी जो शताब्दियों बाद भी नहीं भूला जा सका। सामने युद्ध में प्रतिपक्षी के समान रूप से सन्नद्ध होने पर इतने वैमनस्य पूर्ण भावों का जन्म नहीं हो सकता था। कानपुर और फतेहपुर जिले के कई गांवों के बूढ़े ठाकुरों से मुझे यह घटना और यह कटुतापूर्ण अनुभूति उसी प्रकार सुनने को मिली है। इन लोगों ने बताया

१- भगवंतराय के निधन से संबंधित अनेक अनुश्रुतियां प्रचलित हैं। एक के अनुसार भगवंतराय युद्ध जीत कर पूजा कर रहे थे और इसी बीच शत्रु के पुन: आक्रमण करने की उन्हें सूचना मिली, किन्तु उन्होंने पूजा से उठने की इच्छा नहीं प्रकट की और दुश्मन के आने पर सशरीर स्वर्ग चले गये। इसी प्रकार यह भी कहा जाता है कि असोथर के कुछ लोग बद्रीनाथ गये थे। वहां उन लोगों ने कुछ दिव्य साधुओं के दर्शन किये। साधुओं ने यात्रियों से उनका निवासस्थान असोथर में सुनकर पूछा कि क्या वहां कोई भगवंता रहता है। उससे तुम लोग कहना कि उसकी धूनी बुझ रही है वह आकर उसे प्रज्वलित करे। अनुश्रुति के अनुसार यह संवाद मिलने के थोड़े समय बाद ही भगवंतराय स्वर्गवासी हो गये। इस प्रकार इनसे प्रकट होता है कि उनका निधन अचानक और अप्रत्याशित रूप से हुआ था। स्मरण रहे कि इस प्रकार की कथायें अक्सर श्रेष्ठ पुरुषों के साथ जोड़ ली जाती हैं।

कि वे भी जान वंशियों के साथ तब से अबतक कोई व्यवहार या खानपान नहीं करते ।[1] फतेहपुर गजेटियर के परिशिष्ट में भी यही लिखा हुआ है । अत: इन सब बातों को देखते हुए कहा जा सकता है कि भगवंतराय दुर्जनसिंह जानवंशी के हाथों छल से ही मारे गए थे ।[2]

'रासा भगवंतसिंह का' के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा

रासा० के कर्त्ता कवि सदानंद भी अपने नायक के समकालीन थे । भगवंतराय की मृत्यु के ठीक एक वर्ष के भीतर ही कवि ने इस रचना को लिख डाला था । यह रचना भी भगवंतराय के व्यक्तित्व व उनसे संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रामाणिक रूप से महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है । कथानक का पूर्ण विस्तार नायक के सआदत खां के साथ हुए अंतिम युद्ध में सीमित है ।

विशेषरूप से इस कवि ने भगवंतराय के स्वभाव, राज्य-व्यवस्था मंत्रिमंडल, सेना के संगठन पर प्रकाश डाला है जो अन्यत्र नहीं मिलता । युद्ध की तैयारी, नायक की धार्मिकता, दानशीलता, दाम्पत्य तथा युद्ध का उत्साह इत्यादि तो इस कवि की वाणी में सजीव और साकार हो उठा है । यह सब भी वाह्य प्रमाणों से पुष्ट होता है । हम इस ग्रंथ के ऐतिहासिक तथ्यों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं :

१- साखा गांव के मुख्तार दलीप सिंह ने अपने सामने की यह बात बताई थी ।
२- इस सम्बंध में हमने महाराज कुमार डा० रघुवीर सिंह(सितामऊ) से पत्र व्यवहार किया है । उनका मत है कि भगवंतराय युद्ध भूमि में ही दुर्जन सिंह के हाथों मारे गये । बहुत संभव है दुर्जन सिंह ने अचानक और अप्रत्याशित आक्रमण कर दिया हो, जिसका सामना नहीं किया जा सका ।

सादत खां ने नूर मुहम्मद खां को रसूलाबाद की माल गुजारी वसूल करने के लिए अन्तर्वेद प्रदेश में भेजा, किन्तु वह बेचारा भगवंतराय द्वारा पराजित हुआ। इस समाचार के मिलते ही नवाब अपने सेना नायक का बदला चुकाने के लिए भगवंत राय की ओर लौट पड़ा। जाजमऊ[1] के पास उसने गंगा पार की जहां दुर्जन सिंह कोड़े का चौधरी उसकी सेवा में आकर उपस्थित हुआ। इस व्यक्ति ने भगवंतराय के विरुद्ध हर प्रकार से सहायता करने का अपना निश्चय निवेदित किया। नवाब और दुर्जनसिंह के बीच हुई बातचीत से प्रकट होता है कि भगवंतराय और दुर्जनसिंह के बीच पहले निकट संबंध थे।[2] नरवल, खजुहा के मार्ग से गाजीपुर के दक्षिण की ओर एक योजन की दूरी पर पहुंचकर नवाब ने अपनी सेना का पड़ाव डाल दिया।[3] एक दूत को भेजकर उसने भगवंतराय से संधि का प्रस्ताव रखा जिसे भगवंतराय ने मंत्रियों की राय लेकर अमान्य कर दिया।[4] मंत्रियों ने बताया कि यह नवाब विश्वसनीय नहीं है तुम्हें कैद करके यह मार डालेगा। उसके भूतकाल के कुछ कपटपूर्ण उदाहरण-जैसे सचेड़ी तथा पट्यो ग्राम की घटनाएं-उसे बताए गए।[5]

पत्नी ने भगवंतराय को इस अवसर पर युद्ध को टाल देने की राय दी। उन्होंने कहा कि सम्प्रति हमें बुंदेलखंड प्रदेश में जाकर समय काटना चाहिए तथा अनुकूल

१- जंगनामा के अनुसार नवाब की सेना ने बिठूर में गंगा पार किया था।

२- सा० जा० इ०-८, पृ० ३४२ में दुर्जनसिंह को भगवंतराय का निकट संबंधी लिखा है पर वह ब्राह्मण था इसलिए संबंध की बात शायद मित्रता के कारण इतिहास लेखक ने कल्पित कर ली होगी। सादत खां और दुर्जन सिंह की बातचीत (रासा) के अनुसार भी दोनों की पूर्व मित्रता का परिचय मिलता है।

३- युद्धभूमि और मुड़चौरा के देखने से रासा० की यह सूचना भी ठीक प्रतीत होता है।

४- सियारुल०-१, प० २७० में भी एक समझौते की वार्ता का संकेत है।

५- सचेड़ी को नवाब ने छल से चंदेलों से लिया था। फ० टू० नवाब्स० पृ० ४५ संभव है पट्योग्राम को भी इसी प्रकार जीता हो।

अवसर आते ही पुन: अपने इस प्रदेश में लौट आना चाहिए ।[१] परन्तु भगवंतराय ने युद्ध को ही अपने लिए अधिक श्रेयस्करबताया ।

युद्धभूमि में उनकी सुदृढ़ और नियंत्रित सेना ने प्रस्थान किया । उसे देखते ही शत्रुओं के होश कबूतर से उड़ने लगे । सामने शस्त्रों की मार की दूरी पर पहुंचते ही उन्होंने प्रबल वेग से आक्रमण कर दिया ।[२]

सादत खां हाथी पर सवार था और हाथियों का व्यूह उसे घेर कर उसकी रक्षा कर रहा था ।

सादति खां कुंभी चढ़ौ मुंडा हौदा सोइ
दूजे बारन एलची पीछे कुंजर दोइ
करी चारि कीगोलतहैं आगे वान निसान
पुनि पचास पदतीत हैं, नैजा बीस प्रमान (रासा०

भगवंतराय का आक्रमण सीधे इसी व्यूह पर हुआ । भीषण आक्रमण के कारण नवाब स्वयं सुरक्षित स्थान को चला गया तथा उसके स्थान पर अबूतुराव खां ने सामना किया[3] तुराब खां को स्वर्ग सिधारना पड़ा । वह भगवंतराय के बर्छे का प्रहार न झेल सका । तेजसिंह नामक वीर ने आकर भगवंतराय के वेग को रोकने का प्रयत्न किया किंतु उसका भी जीवन-घट भर चुका था ।

भगवंतराय के पक्षधर सामन्तों में कवि ने भवानीसिंह मर्दनसिंह, नौलसिंह, दलसिंह के नाम गिनाए हैं । नवाब के पक्ष में तुराब खां, दुर्जनसिंह, तेजसिंह, अलीखां

१- वजीर कमरुद्दीन के आक्रमण के समय भगवंतराय का बुंदेलखंड में अपनी रक्षा के लिए पलायन करने के प्रमाण के आधार पर यह कथन अत्यन्त स्वाभाविक एवं सत्य प्रतीत होता है ।

२- भगवंतराय की सेना ने नवाब पर बड़े प्रबल वेग से आक्रमण किया इसे सभी स्वीकार करते हैं । जंगनामा के अतिरिक्त किसी अज्ञात कवि की ये पंक्तियां दर्शनीय हैं :

दृगनते पग आगे, पगनते मन आगे
मन,दृग, पगन में होड़ सी है ह्वै रही.

३- सियारुल०-१, पृ० २७०

दीन मुहम्मद, नूर मुहम्मद, मीर मुहम्मद, मुहम्मद खां तथा शेर अली के ।

दुर्जनसिंह से भगवंतराय का युद्ध और उसी के हाथों भगवंतराय का अंत[1] युद्ध की तिथि :

सित नौमी संग्राम भो कातिक मंगलवार

मंगलवार कातिक शु० ६ अक्टूबर १४,१७३५ ई०

` भगवंत विरुदावली ` के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा

कवि गोपाल की रचना भगवंतराय खीची की विरुदावली नायक भगवंतराय के निधन के निकट बाद ही लिखी गई प्रतीत होती है । रचना की वर्णन शैली व नायक के प्रति कवि के कथन आदि पर विचार करने पर यह धारणा पुष्ट हो जाती है । कवि हृदय से नायक के लिए व्यक्त होने वाली भाव विह्वलता भी नायक से कवि का अत्यंत निकट का संबंध बताती है । इस कवि ने भी भगवंतराय के अंतिम युद्ध का ही लेखा उपस्थित किया है, फिर भी उनके कुछ पिछले युद्धों की झांकी भी प्रस्तावना में दे देता है जिससे अन्यत्र प्राप्त विवरणों को पुष्ट करने में उनसे सहायता मिल जाती है । रासा और जंगनामा की ऐतिहासिक परीक्षा में उनसे सहायता मिल जाती है । रासा और जंगनामा की ऐतिहासिक परीक्षा में यथा स्थान इनसे सहायता ली गई है । परन्तु यह कवि कुछ और पहले की घटनाएं जो सन् १७२२ की होंगी, उनका भी संकेत करता है । यह कथन इस उदाहरण- ` जिन सैर अफगन खान को दल हन्यो `

१- दुर्जनसिंह के ही हाथों लगभग सभी ने भगवंतराय का अन्त माना है किन्तु जैसा कि पिछले पृष्ठों में लिखा गया है वे इस युद्ध में या अचानक आक्रमण में उसके द्वारा मारे गये थे ।

वरह्निन सौं भलौ '[1] से पुष्ट होता है । इसके अतिरिक्त नायक के प्रति सामान्यत: लोगों की क्या धारणा थी यह तथ्य भी इस कवि द्वारा विशेष रूप से सामने आता है । जैसे :

जिन सतयुग की रीति कीन्ही सकल जम्बूदीप में

o o o

' गुन करन अर्जुन भीम के भगवंतराय महीप में '

भगवंतराय के प्रति यदि ऐसी धारणा व्यक्त है तो उसे मात्र कवि की उड़ान कहकर नहीं उड़ाया जा सकता है । भूधर[2] इत्यादि कवियों द्वारा उनकी मृत्यु पर लिखी गई शोक रचनाओं में इसी प्रकार के भाव प्रकट होते हैं । अनुश्रुतियों भी उन्हें इसी प्रकार का गौरव प्रदान करती है ।[3] फिर यह रचना उन्हें तुष्ट करने के लिए नहीं वरन् अपने श्रद्धावनत हृदय के आत्म निवेदन के रूप में अवतरित हुई है ।

सामान्यत: इस कृति द्वारा निम्न ऐतिहासिक सूचनाएं मिलती हैं :

१- अब्दुल नबी की सेना पर रात्रि के समय कुछ सैनिकों ने तीव्र प्रहार किया शेर अफगन ने घटनास्थल पर पहुंचने कर भारी क्षति उठाकर उनकी सुरक्षा कर सका ।
लें०मु० भाग-२ पृ० ११

२- पारथ समान कीन्हों भारत में आनबान सिर बना बाध्यो है समर सपूती को '
तथा
फूटे भाल भिक्षुक के जूझे भगवंतराय, अरराय टूट्यौ कुलखंभ हिन्दुवाने को '

३- इसी अध्याय में जंगनामा की ऐतिहासिकता पर विचार करते समय टिप्पणी में जो अनुश्रुतियां दी गई हैं, उनसे प्रकट होता है कि लोक ने उन्हें अवतारी पुरुष के रूप में ग्रहण किया था । स्वयं मुहम्मद के भी वचन हैं ' चमुंडा जा बयां करतो, उतर औतार धारा है '

राजा हरिकेश के पुत्र भगवंतराय जितने युद्ध वीर थे, उतने ही धर्मवीर भी ।[१] उन्होंने सत्ययुगी शासन[२] व्यवस्था करके गो ब्राह्मण की रक्षा की तथा अपने जीवन काल में ~~छब्बीस~~ २२ युद्ध लड़े ।[३] इन में से कुछ प्रमुख युद्धों के प्रतिद्वन्द्वी, शेर अफगन खां, जां निसार खां, वजीर, ख्वाजमीर, आदि थे ।[४]

भगवंतराय अपने क्षेत्र के राजपूतों के समर्थ संगठन कर्ता थे । उनके झंडे के नीचे एकत्र होकर उनके अंतिम युद्ध में राजपूतों की तेरह उपजातियों ने साथ दिया था ।[५]

सादत खां के समक्ष युद्ध में प्रस्थान करते समय भगवंतराय ने प्रतिज्ञा की कि या तो मैं नवाब को जीतूंगा या स्वयं अपने मस्तक को खंडित करूंगा ।[६] युद्ध भूमि में वे लड़े भी अद्भुत विक्रम से । नवाब की सैना विचलित हो गई तथा स्वयं नवाब को भी पीठ दिखानी पड़ी ।[७] विरोधी पक्ष के कई सामन्तों को उन्होंने स्वर्ग के दूतों

१- रासा०

२- रासा०

३- श्री भगीरथ दीक्षित ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग ६ अंक ३ में इनको ४८ युद्धों का नायक बताया गया है परन्तु विरुदावली० की एक हस्तलिखित प्रति में पृष्ठ के पार्श्व में टिप्पणी है " बाइस समर भये गोपाल, इतनै भाषत दीन दयाल " लिखा हुआ हमें मिला है ।

४- इन सभी नामों की प्रामाणिकता इतिहास से हो जाती है पिछले पृष्ठों में इनका उल्लेख हो चुका है ।

५- जंगनामा में आये विरोधी राजपूतों की जातियों के सापेक्ष्य में इनकी विश्वसनीयता प्रमाणित है ।

६- युद्ध में विजय का दृढ़ संकल्प और साहस की अडिगता इससे प्रकट होती है । रासा० में भी इसकी ध्वनि मिल जाती है ।

७- शरम दिल्ली की न कीन्ही, समर सन्मुख पीठ दीन्ही... विरुदावली तथा हाथी हाथा हाथी तै ~~कथन~~ सहादत उतरिगो...... अज्ञात

खूबों को सौंप दिया । कवि के अनुसार उनके नाम, तुराव खां, बावन हजारी[1] मुहम्मद खां तथा खान अहमद हैं ।

भगवंतराय के पक्ष में उनके भतीजे भवानी सिंह की वीरता की इस कवि ने भी अन्य कवियों की भांति सबसे अधिक प्रशंसा की है । इस कवि द्वारा उनका वीर रूप बड़ी ही समर्थ रेखाओं व रंगों में उभार कर ऊपर लाया गया है । कवि ने युद्ध के बीच थोड़े से बचे हुए संगी राजपूतों के साथ भगवंतराय को दिवंगत हुआ बताया है ।

शंभुनाथ मिश्र तथा अन्य स्फुट रचनाकारों की रचनाओं में कुछ ऐतिहासिक तथ्य

कवि शंभुनाथ मिश्र की भगवंतराय से संबंधित रचनाएं यद्यपि प्रकीर्ण रूप से ही प्राप्त हैं, फिर भी उनका महत्व बहुत अधिक है । वर्णनात्मक शैली में लिखी गई कविताओं के लगभग समकक्ष ही इनका भी ऐतिहासिक महत्व सिद्ध होता है । इस कारण स्पष्ट है कि 'भगवंतराय यश वर्णन' नामक इनकी रचना भी अन्य वर्णनात्मक रचनाओं के समान रही होगी । संभव है इस समय प्राप्त उनके फुटकर छंद अधिकांश में उसी कृति के कलेवर से निकले हों । इतिहास से समन्वय स्थापित करने पर इन फुटकर छंदों की ऐतिहासिकता निर्भ्रान्त हो जाती है । इतना अवश्य है कि इतिहास की उक्ति में इन्होंने काव्यात्मकता भी उभारी है । तात्पर्य यह कि इतिहास की सीधी सादी शब्दावली के स्थान पर इन्होंने व्यंजनात्मक शब्दावली एवं वाक्यावली का प्रयोग किया है ।

१- बावन हजारी के गिरने का उल्लेख शंभुनाथ ने भी किया है :

" बावन हजारी ते अजारी से सहमि गिरे
धौंसा की धमक धूरि परी मुहं माही है "

" भय के अजीरन ते जीरन उजीर भए "[1]

तथा

" स्याही लाई बदन तमाम पातसाही के "[2]

इसी प्रकार :

दतिया को राऊ रामचन्द्र जबखेत आयो
दिल्ली वाले दलन को दिया सो बुझाइगो "[3]

तथा

भगवंत नाहर के पंजा से निकसि शंभु
सहमे सहादत चलैन छल छंद है "
बोलत न डोलत न खोलत पलक जैसे
सिंह के सपेट दबि रहत गयंद है "[4]

१- विरुदावली में भी लिखा है " जिन बम्बदै सन्मुख समर में हटक दियो उजीर को" परन्तु मराठा पत्रों और फारसी इतिहासकारों के अनुसार बरसात में उतनी विशाल सेना के साथ इनका पीछा बुंदेलखंड में कर सकना सम्भव न था । अत: वजीर को लौटना पड़ा ।

२- स्याही लाई " मुहावरा है । कलंकित करना कालिख पोतना । भगवंतराय के उत्कर्ष से इतिहासकारों के अनुसार भी दिल्ली के सिंहासन को कालिख लग गयी थी । बादशाह मुहम्मदशाह का दक्षिण से वजीर को भगवंतराय के दमन के लिए यह लिख कर बुलाया " इस समय पानी हराम हो गया है एवं शराब जायज है" - लै०मु० भाग-२ पृ० २७७ तथा सा० जा० इं०-८, पृ० ३४१ में वजीर का सआदत खां के लिए लिखा गया पत्र इसको प्रमाणित करता है ।

३-मीरातुल० पृ० १७१ अ

४- रासा०, विरुदावली०, जंगनामा तथा सियारुल१ पृ० २७०

अन्तर्वेद में फैले हुए भगवंतराय के विरोधी दल में जिन जातियों के लोग थे, उनकी भी कवि ने चर्चा की है

" मुगल पठानन चन्देलन बुन्देलन को
फैल्यो दल मानों प्रलैको वारापार है ।"[1]

इसी प्रकार जितने भी स्फुट छंद प्राप्त हैं उनके लोक प्रियहोने तथा अविस्मृत होने का एक प्रमुख कारण उनमें निहित ऐतिहासिकता है । जिनमें से अधिकांश का उपयोग हमने यथावसर अन्यत्र प्राप्त विवरणों की पुष्टि के लिए किया है । अत: विम्ब प्रतिबिम्ब भाव से वे स्वयं भी ऐतिहासिक सत्य के वहन करने के लिए प्रमाणित हो गई हैं, इसे हमने अध्याय के आरम्भ में ही स्पष्ट कर दिया है । इतना हम अवश्य कहना चाहते हैं कि इन प्रकीर्ण रचनाओं में कुछ तो भगवंतराय के इतिहास के जिज्ञासु पाठक के लिए अन्यतम हैं । जैसे भूधर ने अपने केवल दो कवित्तों में ही भगवंतराय के व्यक्तित्व को समेट कर खड़ा कर दिया है ।

१- तुलना कीजिये सा०जा०इ०-८ पृ० २४२, पेशवा दफ्तर० भाग १४ पत्र संख्या ६ तथा जंगनामा से यह जाति परिगणना ठीक ठहरती है ।